Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 08 Issue 07, July- 2013
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'कुरूक्षेत्र' की कथावस्तु में ऐतिहासिकता

Dr.Renu Bhatia
Head, Hindi Department
G.V.M. Girls College, Sonepat

कथावस्तु किसी भी साहित्यिक रचना का प्राणतत्व होती है। क्योंकि कथावस्तु भावसम्प्रेषण एवं रसास्वादन का आधार है। वस्तुतः जो स्थान किसी भवन में आधारि"ाला का होता है, वही स्थान साहित्यिक रचना में कथावस्तु अथवा कथानक का होता है।

दिनकर रचित 'कुरूक्षेत्र' एक चिन्तन प्रधान काव्य है, जिसमें युद्ध–समस्या पर विचार किया गया है। 'कुरूक्षेत्र' म घटनाएँ न के बराबर हैं। विचारों के द्यात–प्रतिद्यात से ही कथावस्तु का निर्माण होता है। जब भी किसी साहित्यिक रचना का सम्बन्ध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इतिहास से होता है तो उस रचना की कथावस्तु में 'ऐतिहासिकता' के गुण का होना अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण हो जाता है।

'कुरूक्षेत्र'का कथास्त्रोत महाभारत है। अतः इसमें ऐतिहासिक वि"िाष्टता विद्यमान है। इस सन्दर्भ में स्वयं कविवर दिनकर का कथन अवलोकनीय है – 'कुरूक्षेत्र' की रचना व्यास के अनुकरण पर नहीं हुई है और न ही महाभारत को दोहराना ही मेरा उद्दे"य था। मुझ जो कुछ कहना था वह युधिष्ठिर और भीष्म का प्रसंग उठाए बिना भी कहा जा सकता था, किन्तु तब यह रचना शायद प्रबन्ध के रूप में न उतर कर मुक्तक बन कर रह गई होती तो भी यह सच है कि इसे प्रबन्ध रूप में लाने की मेरी कोई नि"िचत योजना नहीं थी।''[1] बकौल विमलकुमार जैन – 'कुरूक्षेत्र' के कथानक का मूलाधार महाभारत ही है। जैसा कि इस कथन के अन्तिम वाक्य से प्रतीत होता है।'[2]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'कुरूक्षेत्र' में ऐतिहासिकता का गुण विद्यमान है। यद्यपि कवि ने इतिहास सम्मत कथानक को कल्पना का पुट न देकर व युगानुरूप विचारों से युक्त कर उसे पर्याप्त मौलिकता प्रदान की है। लेकिन 'कुरूक्षेत्र' में कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनसे यह पुष्टि होती है कि कुरूक्षेत्र के कथानक का स्त्रोत महाभारत ही है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 08 Issue 07, July- 2013
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महाभारत के 'शान्तिपर्व' के 'अध्याय एक' में नारद मुनि यधिष्ठिर से प्र"न करते हैं कि हे राजन! तम युद्ध में विजयी हो, असीम वैभव के स्वामी हो। किन्तु इस युद्ध में होने वाले नर–संहार से क्या तुम्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा। तब महाराज युधिष्ठिर नारद मुनि के प्र"न का उत्तर इस प्रकार देते हैं –

विजितयं मही कृत्स्ना कृ'ण बाहुबलाश्रयात।
ब्राह्मणानां प्रसादेन भीमार्जुनबलेन च।
इदं मम महद्दुःखं वर्तते हृदि नित्यदा।
कृत्वा ज्ञातिक्षयमिमं महान्तं लोभकारिणम्।।
सौभद्रं द्रौपदेया"च द्यातचित्वा सुतान् प्रियान्।
ज्योऽयमजयाकारो भगवन्प्रतिभाति मे।।[3]

अर्थात मैंने कृ'ण के बाहुबल का आश्रय लेकर ब्राह्मनों के प्रसाद से तथा भीमार्जुन की शाक्ति से इस पृथ्वी को तो जीता परन्तु लालचव"ा मैंने बन्धु–बान्धवों का क्षय कराया है, उसका मुझे महान दुःख है। द्रौपदी एवं सुभद्रा के पुत्रों की हत्या कराकर प्राप्त विजय मुझे अजय अथवा पराजय सम प्रतीत हो रही है। महाभारत में विद्यमान इस तथ्य को दिनकर रचित कुरूक्षेत्र में युधिष्ठिर इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं –

यह महाभारत वृथा, निश्फल हुआ
उफ! ज्वलित कितना गरलमय व्यंग्य है।
पाँच ही असहिश्णु नर के द्वेश से
हो गया संहार पूरे दे"ा का
द्रोपदी हो दिव्यवस्त्रालंकृता
और हम भोगे अहम्मय राज्य यह
पुत्र–पति हीना इस से हुई
काटि माताएँ, करोड़ों नारियाँ।
रक्त से छाने हुए इस राज्य को
वज्र हो कैसे सकूँगा भोग मैं।[4]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 08 Issue 07, July- 2013
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महाभारत के '"ाान्तिपर्व' के सप्तम् अध्याय में युधिष्ठिर निर्वेद आपूरित हो राज्य त्याग की बात करते हैं तथा साथ ही वह राज्य भोगने की अपेक्षा भिक्षा माँगकर निर्वाह करना उत्तम समझते हैं। 'कुरूक्षेत्र' के युधिष्ठिर भी बन्धु–बान्धवों के विना"ा की अपेक्षा भिक्षा माँग कर निर्वाह करने के इच्छुक हैं –

जानता कहीं जो परिणाम महाभारत का,
तन–बल छोड़ मैं मनोबल से लड़ता
तप से, सहिश्णुता से, त्याग से सुयोधन को
जीत, नई नींव इतिहास को मैं धरता।
और कहीं वज्र गलता न मेरी आह से जो
मेरे तप से नहीं सुयोधन सुधरता
तो भी हाय, यह रक्त–पात नहीं करता मैं
भाईयों के संग कहीं भीख माँग मरता।।[5]

महाभारत में युधिष्ठिर निर्वेद एवं ग्लानि भाव से युक्त हो वनगमन की बात करने लगते हैं तो महर्षि वेदव्यास उनके कर्त्तव्य बोध को जागृत करते हुए उन्हें राजधर्म प्राप्ति हेतु श्रीकृ'ण के साथ पितामह भीष्म के पास भेजते हैं। युधिष्ठिर भीष्म पितामह के पास पहुँच कर लज्जा और संकोच के कारण कुछ नहीं कह पाते, अतः श्रीकृ'ण कहते हैं –

लोकस्य कदनं कृत्वा लोकनाथो वि"ाांपते।
अभि"ााप भयाद् भीतो भवन्तं नोपसर्पति।।
पूज्यन्मान्या"च भक्ता"च,
गुरून्सम्बन्धिबान्धवान्
अर्घार्हानिशुभिभित्वा
भवन्तं नोपसर्पति।[6]

अर्थात लोक का संहार करके अभि"ााप से भयभीत, बाणों से पूज्य, मान्य, भक्त, गुरू, सम्बन्धी एवं बान्धव सभी का विना"ा कर ये आपके समक्ष बोलते हुए संकोच का अनुभव कर रहे हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 08 Issue 07, July- 2013
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समस्त परिस्थिति को जानकर पितामह भीष्म युधिष्ठिर को राजधर्म की ि"ाक्षा देते हैं और उनके मन की ग्लानि को दूर करते हैं। पितामह युद्ध में मिथ्या प्रवृत्त पिता, पितामह, गुरू, सम्बन्धी तथा बान्धवों के विना"ा को उचित ठहराते हैं तथा युद्ध को धर्म की संज्ञा देते हैं। 'कुरूक्षेत्र' के भीष्म भी स्वत्व अन्वेषण के लिए किए गए युद्ध को उचित ठहराते हैं –

चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है
युधिश्ठिर! स्वत्व की अन्वेशणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।[7]

इसी प्रकार तृतीय सर्ग में भीष्म मनुष्यता के मरण की स्थिति में युद्ध को धर्म की संज्ञा देते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'कुरूक्षेत्र' का कथानक, इतिहास सम्मत है और उस का स्त्रोत 'महाभारत' है। कथावस्तु पात्र आदि तत्वों की दृष्टि से भी कुरूक्षेत्र में ऐतिहासिकता विद्यमान है।

संन्दर्भ–सूची

1. दिनकर : कुरूक्षेत्र : निवेदन, **पृ॰ 9**
2. सं॰ सावित्री सिन्हा : दिनकर, **पृ॰ 142**
3. महाभारत : शान्तिपर्व, अध्याय 1, श्लोक **14–15**
4. रामधारी सिंह दिनकर : कुरूक्षेत्र, **पृ॰ 6–7**
5. रामधारी सिंह दिनकर : कुरूक्षेत्र, **पृ॰ 9–10**
6. महाभारत : शान्तिपर्व, अध्याय 26, श्लोक **12–13**
7. रामधारी सिंह दिनकर : कुरूक्षेत्र, **पृ॰ 39**